

कक्षा 11 हिंदी कोर
पुनरावृत्ति नोट्स
पाठ - 2 राजस्थान की रजत बूँदे

पाठ का सारांश - यह रचना राजस्थान की जल-समस्या का समाधान मात्र नहीं है, बल्कि यह जमीन की अतल गहराइयों में जीवन की पहचान है। यह रचना धीरे-धीरे भाषा की ऐसी दुनिया में ले जाती है जो कविता नहीं है, कहानी नहीं है, पर पानी की हर आहट की कलात्मक अभिव्यक्ति है।

लेखक राजस्थान की रेतीली भूमि में पानी के स्रोत कुंई का वर्णन करता है। वह बताता है कि कुंई खोदने के लिए चेलवांजी काम कर रहा है। वह बसौली से खुदाई कर रहा है। अंदर भयंकर गर्मी है। गर्मी कम करने के लिए बाहर खड़े लोग बीच-बीच में मुट्ठी भर रेत बहुत जोर से नीचे फेंकते हैं। इससे ताजी हवा अंदर आती है और गहराई में जमा दमघोंटू गर्म हवा बाहर निकलती है। चेलवांजी सिर पर काँसे, पीतल या अन्य किसी धातु का बर्तन टोप की तरह पहनते हैं, ताकि चोट न लगे। थोड़ी खुदाई होने पर इकट्ठा हुआ मलवा बाल्टी के जरिए बाहर निकाला जाता है।

चेलवांजी कुँई की खुदाई व चिनाई करने वाले प्रशिक्षित लोग होते हैं। कुंई कुँई से छोटी होती है, परंतु गहराई कम नहीं होती। कुंई में न सतह पर बहने वाला पानी आता है और न भूजल। मरुभूमि में रेत अत्यधिक है। यहाँ वर्षा का पानी शीघ्र भूमि में समा जाता है।

रेत की सतह से दस पंद्रह हाथ से पचास-साठ हाथ नीचे खड़िया पत्थर की पट्टी चलती है। इस पट्टी से मिट्टी के परिवर्तन का पता चलता है। कुँओं का पानी प्रायः खारा होता है। पीने के पानी के लिए कुंइयाँ बनाई जाती हैं। पट्टी का तभी पता चलता है जहाँ बरसात का पानी एकदम नहीं समाता। यह पट्टी वर्षा के पानी व गहरे खारे भूजल को मिलने से रोकती है। अतः बरसात का पानी रेत में नमी की तरह फैल जाता है। रेत के कण अलग होते हैं, वे चिपकते नहीं। पानी गिरने पर कण भारी हो जाते हैं, परंतु अपनी जगह नहीं छोड़ते। इस कारण मरुभूमि में धरती पर दरारें नहीं पड़तीं वर्षा का भीतर समाया जल अंदर ही रहता है। यह नमी बूंद-बूंद करके कुंई में जमा हो जाती है।

राजस्थान में पानी को तीन रूपों में बाँटा है- पालरपानी यानी सीधे बरसात से मिलने वाला पानी है। यह धरातल पर बहता है। दूसरा रूप पातालपानी है जो कुँओं में से निकाला जाता है तीसरा रूप है-रेजाणीपानी। यह धरातल से नीचे उतरा, परंतु पाताल में न मिलने वाला पानी रेजाणी है। वर्षा की मात्रा 'रेजा' शब्द से मापी जाती है जो धरातल में समाई वर्षा को नापता है।

यह रेजाणीपानी खड़िया पट्टी के कारण पाताली पानी से अलग रहता है अन्यथा यह खारा हो जाता है। इस विशिष्ट रेजाणी पानी को समेटती है कुंई। यह चार-पाँच हाथ के व्यास तथा तीस से साठ-पैंसठ हाथ की गहराई की होती है। कुंई का प्राण है-चिनाई। इसमें हुई चूक चेजारो के प्राण ले सकती है। हर दिन की खुदाई से निकले मलबे को बाहर निकालकर हुए काम की चिनाई कर दी जाती है। कुंई की चिनाई ईट या रस्से से की जाती है। कुंई खोदने के साथ-साथ खींप नामक घास से मोटा रस्सा तैयार किया जाता है, फिर इसे हर रोज कुंई के तल पर दीवार के साथ सटाकर गोला बिछाया जाता है। इस तरह हर घेरे में कुंई बँधती जाती है। लगभग पाँच हाथ के व्यास की कुंई में रस्से की एक कुंडली का सिर्फ एक घेरा बनाने के लिए लगभग पंद्रह हाथ लंबा रस्सा चाहिए। इस तरह करीब चार हजार हाथ लंबे रस्से की जरूरत पड़ती है।

पत्थर या खींप न मिलने पर चिनाई का कार्य लकड़ी के लंबे लट्टों से किया जाता है। ये लट्टे, अरणी, बण, बावल या कुंबट के पेड़ों की मोटी टहनियों से बनाए जाते हैं। ये नीचे से ऊपर की ओर एक-दूसरे में फँसाकर सीधे खड़े किए जाते हैं तथा फिर इन्हें खींप की रस्सी से बाँधा जाता है।

खड़िया पत्थर की पट्टी आते ही काम समाप्त हो जाता है और कुई की सफलता उत्सव का अवसर बनती है। पहले काम पूरा होने पर विशेष भोज भी होता था। चेजारो की तरह-तरह की भेंट, वर्ष-भर के तीज-त्योहारों पर भेंट, फसल में हिस्सा आदि दिया जाता था, परंतु अब सिर्फ मजदूरी दी जाती है। जैसलमेर में पालीवाल ब्राह्मण व मेघवाल गृहस्थी स्वयं कुंइयाँ खोदते थे।

कुंइ का मुँह छोटा रखा जाता है। इसके तीन कारण हैं। पहला रेत में जमा पानी से बूंदें धीरे-धीरे रिसती हैं। मुँह बड़ा होने पर कम पानी अधिक फैल जाता है, अतः उसे निकाला नहीं जा सकता। छोटे व्यास की कुंइ में पानी दो-चार हाथ की ऊँचाई ले लेता है। पानी निकालने के लिए छोटी चड़स का उपयोग किया जाता है। दूसरे, छोटे मुँह को ढकना सरल है। तीसरे, बड़े मुँह से पानी के भाप बनकर उड़ने की संभावना अधिक होती है। कुंइयों के ढक्कनों पर ताले भी लगने लगे हैं।

यदि कुंइ गहरी हो तो पानी खींचने की सुविधा के लिए उसके ऊपर घिरनी या चकरी भी लगाई जाती है। यह गरेड़ी, चरखी या फरेडी भी कहलाती है। खड़िया पत्थर की पट्टी एक बड़े क्षेत्र में से गुजरती है। इस कारण कुंइ लगभग हर घर में मिल जाती है। सबकी निजी संपत्ति होते हुए भी यह सार्वजनिक संपत्ति मानी जाती है। इन पर ग्राम पंचायतों का नियंत्रण रहता है। किसी नई कुंइ के लिए स्वीकृति कम ही दी जाती है, क्योंकि इससे भूमि के नीचे की नमी का अधिक विभाजन होता है। राजस्थान में हर जगह रेत के नीचे खड़िया पत्थर नहीं है। यह पट्टी चुरू, बीकानेर, जैसलमेर और बाड़मेर आदि क्षेत्रों में है। यही कारण है कि इस क्षेत्र के गाँवों में लगभग हर घर में एक कुंइ है।